फरीदाबाद

# मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

फरीदाबाद नगर निगम इन 4 वर्षों में ही जहरीली गैस से 17 सीवर सफाई कर्मचारियों का कत्ल कर चुकी है, सिलसिला जारी।

नई सीरीज नम्बर 170 अगस्त 2002

## ज़रूरत है...

## असल समाधानों की

समस्या ही समस्या हैं। समस्याओं के अम्बार लगे हैं। जहाँ देखो समस्या ही दीखती हैं। ऐसा चक्रव्यूह है कि जिनमें समस्याओं के समाधान दिखाते- देखते हैं, अक्सर उनके ही दामन में समस्याओं के भण्डार छिपे होते हैं।

इन्सानों के बीच रिश्तों को जीवन की सफलता की कसौटी लें तो इस पैमाने पर आज हम बहुत नीचे हैं। असल समाधान के आंकलन के लिये मनुष्यों के बीच सम्बन्ध सुधरने को एक निर्णायक तत्व लेना बनता है।

होड़ और समस्याओं से घिरे होना व्यक्ति- व्यक्ति के बीच अनादर, तिरस्कार, ऊब, अवहेलना, शत्रुता जैसे विकृत भावों को हवा देता है। ऐसे- ऐसे करम उभरते हैं कि एक- दूसरे की निगाहों में गिरने के संग- संग व्यक्ति स्वयं की नजरों में गिरती- गिरता है। छवि- छिपाना बढता अकेलापन लिये है।

असल समाधानों की राहें, जाहिर है, होड़- प्रतियोगिता की बजाय सहयोगों- तालमेलों वाली ही हो सकती हैं। लेकिन इस मारामारी में सहयोग- तालमेल की राह पर बढें कैसे?

कुछ बातों पर विचार- मनन करना आवश्यक लगता है।

प्रत्येक विकट समस्याओं से घिरी है, एक ही समय पर हर एक कई समस्याओं से जूझता है। विफल होना, आधा-'अधूरा होना अक्सर होता है। ऐसे करम भी कर बैठते हैं कि दूसरों की ही नहीं बल्कि अपनी खुद की निगाहों में भी गिरते हैं। जाहिर है, किसी से भी तोड़ने के लिये सौ बातें बताई जा सकती हैं। लेकिन, अपने जैसे, समस्याओं से घिरे व्यक्तियों से तोड़ करते जाने से होगा क्या ?

कभी- कभी सीधे अथवा लपेट कर मुँह पर बुरा कहना और अक्सर पीठ पीछे अपने जैसों की खिल्ली उड़ाना हमारे तालमेलों में प्रमुख बाधाओं के तौर पर हैं। पीड़ित को दोषी ठहराने की बजाय पीड़ित के प्रति आदर मिश्रित सहानुभूति पीड़ितों के बीच तालमेलों का पुख्ता आधार नजर आता है।

**मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :**

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छपते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बताइये अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

## नाम है गुडईयर

**गुडईयर टायर मजदूर :** "फरीदाबाद में 1990 में 1688 परमानेन्ट वरकर थे और आज मात्र 640 हैं— कम्पनी अभी ही 100 को और निकालना चाहती है। मजदूरों की सँख्या कम करने के संग- संग काम का बोझ बढाया जाता रहा है: 1997 में 1200 परमानेन्ट मजदूरों से 110 टन टायर प्रतिदिन उत्पादन लेते थे; 1998 में 1050 वरकरों से 115 टन प्रतिदिन लेने लगे; 1999 में 1000 परमानेन्ट से 125 टन प्रतिदिन; सन् 2000 में 910 मजदूरों से 140 टन टायर प्रतिदिन; 2001 में 750 वरकरों से 143 टन प्रतिदिन; अब 2002 में 640 परमानेन्ट वरकरों से 145 टन टायर प्रतिदिन का उत्पादन लेते हैं। इस कदर लादे जा रहे काम के बोझे के अनुसार निर्धारित टारगेट को कोई मजदूर चार दिन पूरा नहीं कर पाता है तो उसे निलम्बित कर देते हैं।

" लालच, डर और एग्रीमेन्ट की त्रिमूर्ति के जरिये हमारी दुर्गत बढाई जाती रही है। उपहार में साइकिल, घड़ी का लालच दे कर कम्पनी ने 1990 में काम का बोझ बढाया। यहाँ 1993 में पहली बार वी.आर.एस. लगा कर 200 परमानेन्ट मजदूर निकाले— ट्यूब प्लान्ट बन्द किया और ट्यूबें ठेकेदारों से गजरौला, बनारस आदि में बनवाने लगे। अर्थमूवर के भारी टायर प्लान्ट को औरंगाबाद शिफ्ट किया और इसके लिये 1996 में दूसरी वी.आर.एस. लगा कर फिर 200 मजदूर निकाले। रिटायर होते मजदूरों की जगह कोई नई भर्ती नहीं कर सँख्या लगातार घटाई गई। कार्यरतों पर रिटायरों का कार्य भी थोपा जाता रहा है और इसके लिये कम्पनी निश्चित कार्य को किनारे करती जब चाहे, जहाँ चाहे वरकर को लगाने की राह पर बढी है।

" 1997 में शुद्ध लाभ साढे तीन करोड़ रुपये, 1998 में 6 करोड़ और 1999 में गुडईयर का शुद्ध लाभ 19 करोड़ रुपये..... दिन सोमवार, 18 दिसम्बर 2000 को फैक्ट्री के इतिहास में पहली बार कम्पनी ने तीनों शिफ्टों की इक्ट्ठी मीटिंग कैन्टीन हॉल में ली। साहबों ने कई तरह के चार्ट दिखाये और दिमाग चाट कर कम्पनी को 37 करोड़ रुपये घाटा दिखाया। दहशत पैदा कर तीसरी बार वी.आर.एस. लगाई और 110 मजदूर निकाले। घाटे का रोना जारी रख कर 2002 में चौथी बार वी.आर.एस. लगा कर 84 मजदूरों को निकाल बाहर किया है।

" परमानेन्ट मजदूरों को निकाल कर गुडईयर में ठेकेदारों के जरिये वरकर रखना: लैबोरेट्री, फस्ट एड- डिस्पैन्सरी, कच्चा माल स्टोर, वेयरहाउस, बेलकटर ट्रेनिंग, स्वीपर, इन्सपैक्शन .... सब वरकर अब ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। बेन्ड बिल्डिंग में अब एक शिफ्ट कैजुअल वरकरों से चलवा रहे हैं। शॉर्ट क्रू कर, 10X10 ट्यूबर मशीन पर 12 की जगह 6 परमानेन्ट वरकर कर मैनपावर कम का रोना और पूर्ति के तौर पर ठेकेदार के जरिये रखे वरकर लगाना..... 200 के करीब कैजुअलों के संग गुडईयर में 40 ठेकेदारों के जरिये 600 वरकर रखे हैं। कम्पनी कहती है कि वेतन, बोनस, वर्दी, छुट्टी, ग्रेच्युटी आदि वाला परमानेन्ट मजदूर 19000 रुपये महीना में पड़ता है जबकि कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखा वरकर 2200 रुपये में..... खैर! 'खराब हैं' के लेबल के साथ इधर 500 टायर वापस फैक्ट्री लौटा दिये गये हैं और मैनेजमेन्ट इस बात को पी गई है। इन्सपैक्शन में जब 71 परमानेन्ट वरकर थे तब 15- 20 टायर भी ऐसे वापस आने पर कम्पनी उनकी नुमाइश लगवा देती थी और मजदूरों को जलील करती थी।

" गर्मी और घुटन तो फैक्ट्री में रहती ही हैं। काम के बहुत ज्यादा बोझ और अत्याधिक डर की मार ऊपर से है। प्रसन्नचित्त कोई नहीं है, फ्री माइण्ड कोई नहीं है, तनाव बहुत ज्यादा रहता है। इन दो- तीन वर्ष में गुडईयर फैक्ट्री में तीन- चार मजदूरों की ऑन ड्युटी मृत्यु हो गई है।"

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

# दौरे-छापे

**एस.पी.एल. मजदूर :** "20 जून को सफाई और झण्डे। गाड़ी सीधी फैक्ट्री के अन्दर आई। सेक्युरिटी ने कार का दरवाजा खोला, चश्मे वाली महिला को सलाम किया। सैक्टर-6 में प्लॉट 47-48 सम्भाल रहे अनिल रस्तोगी, प्लॉट 21-22 सम्भाल रहे प्रवीण रस्तोगी व जिन्दल और मथुरा रोड़ प्लान्ट सम्भाल रहे बी.के. अग्रवाल तत्काल मैडम के पास पहुँचे और उन्हें चाय-पानी करवाया। कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर सुशील रस्तोगी दो साल से अमरीका में अस्पताल में है।

"20 जून को सुबह ही ठेकेदारों ने सब वरकरों से बोल दिया था कि कोई पूछे तो 8 घण्टे ड्युटी, 2135 रुपये वेतन, ई.एस.आई. कार्ड, पी.एफ., एक शिफ्ट में 8-9000 मीटर उत्पादन, रविवार को बुलाते हैं तो ओवर टाइम डबल रेट से बोलना। जबकि, वास्तव में हर रोज, महीने के तीसों दिन, 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, उत्पादन 20-25 हजार मीटर प्रति शिफ्ट प्रति मशीन, ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं, तीसों दिन 12 घण्टे काम के 2400 रुपये।

"चारों बड़े साहबों और प्रोडक्शन मैनेजर व सेक्युरिटी इन्चार्ज के साथ मैडम ने फैक्ट्री का दौरा किया। मैडम ने किसी मजदूर से बात नहीं की। एक बुजुर्ग ऑपरेटर ने मैडम को कुछ असलियत बताई तो वह बोली कि देखेगी, फिर आयेगी।

"एक ठेकेदार ने रजिस्टर दिखाया जिसमें 8 घण्टे ड्युटी भरी थी। मैडम बोली कि अच्छा है, 8 घण्टे में काम बढिया होता है, आदमी भी ठीक रहते हैं, पैसे भी अच्छे मिल जाते हैं। हम उनकी बातों पर हँसे और सुना कर कहा कि 12 घण्टे काम लेते हैं लेकिन मैडम ने हमारी बातों को अनसुना किया।

"2 जुलाई को अनिल साहब सुबह-सुबह आया और बोला कि ई.एस.आई. का छापा है, जिनकी ई.एस.आई. नहीं है उन सब को बाहर निकाल दो। फैक्ट्री में तीन-चौथाई मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं है — ठेकेदारों ने ज्यादातर लोगों को भूसी वाले बॉयलर के गेट से बाहर किया और 4 बजे तक बाहर ही रखा। जिनकी 9 बजे से ड्युटी थी उन्हें कम्पनी ने फैक्ट्री के अन्दर प्रवेश ही नहीं करने दिया। तीन गाड़ियों में आये 15 लोगों के छापा दल को फिर भी फैक्ट्री में कई ऐसे मजदूर मिले जिनकी ई.एस.आई. नहीं थी — नाम-पते लिखे और हस्ताक्षर करवाये। बाद में कम्पनी द्वारा स्वयं रखे वरकर बता रहे थे कि छापे वाले एक लाख रुपये ले कर गये हैं।

"कई बार फोटो मँगवा कर, हस्ताक्षर करवा कर कम्पनी ने फार्म तैयार किये हैं। तीन-चार महीने उन्हें दराज में रख कर फाड़ दिया जाता। इस बार के छापे के बाद ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के लिये फोटो माँगे तो मजदूरों ने ध्यान ही नहीं दिया। ठेकेदार लोग खुद फोटोग्राफर फैक्ट्री में लाये और मजदूरों के फोटो खींचे हैं।"

# और बातें यह भी

**साधु फोरजिंग मजदूर :** "परमानेन्ट वरकरों ने एक दिन टूल डाउन स्ट्राइक की तब मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों से काम करवाना शुरू किया। परमानेन्टों ने उन्हें रोक दिया। शिकायत बड़े साहब तक पहुँची। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों से बड़े साहब बिदक कर बोले कि तुम लोगों ने हमारे पुराने मजदूरों को खराब कर दिया, बीस साल तक इन्होंने कभी चूँ तक नहीं की थी।"

**भारत मशीन टूल्स वरकर :** "मैं, मेघ श्याम, 15 वर्ष से इस कम्पनी में काम करता रहा हूँ। डी.ए. बन्द करने पर एतराज, बोनस में कटौती का विरोध, वर्दी-जूते रोकने पर एतराज, वार्षिक वेतन वृद्धि नहीं दिये जाने का विरोध आदि पर नाराज मैनेजिंग डायरेक्टर नन्द किशोर सिंगला ने गुस्से में 26 मार्च को फैक्ट्री में मेरे साथ मारपीट की। मैंने थाने में शिकायत दर्ज करवाई। दादागिरी के बाद मुझे निलम्बित कर कम्पनी ने आरोप-पत्र दिया। आरोप-पत्र का उत्तर मैंने दिया, मैनेजमेन्ट को मजबूरन घरेलू जाँच की प्रक्रिया आरम्भ करनी पड़ी। घरेलू जाँच में मेरे हिस्सा लेने और लिखित में मैनेजमेन्ट की झूठों का परदाफाश करने से बौखलाई मैनेजमेन्ट ने मेरी गवाही रोकने के लिये एकतरफा कार्रवाई की। अचानक 4 जून को मुझे मैनेजमेन्ट का कारण बताओ नोटिस मिला जिसका मैंने जवाब दे दिया। पार नहीं पड़ती देख कर कम्पनी ने 20 जून को 'दिनांक शून्य अंकित मेरा इस्तीफा स्वीकार करने' की सूचना मुझे डाक से भेजी जबकि मैंने इस्तीफा दिया ही नहीं है। इतना ही नहीं, मैनेजमेन्ट स्वयं ही मेरे बैंक खाते में चेक जमा करवा आई। श्रम विभाग के दस्तावेजों के आधार पर भारत मशीन टूल्स मैनेजमेन्ट के खिलाफ फर्जी दस्तावेज पेश करने और धोखाधड़ी का एक मामला पहले ही न्यायालय में चल रहा है।"

**मोहता ब्राइट स्टील मजदूर :** "प्लॉट 258 सैक्टर-24 में तेजाब के काम के कारण गुड़ देते थे पर अब गुड़ देना बन्द कर दिया। महीने में साबुन की दो बट्टी देते थे, अब एक बट्टी देने लगे। दस्तखत 1900 पर करवाते हैं और देते 1400 रुपये महीना हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी. एफ. नहीं।"

**सुपर स्विच वरकर :** "कम्पनी का अब रवैया यह हो गया है कि 28 तारीख से पहले तनखा नहीं देती।"

**शिवम् थर्मापैक मजदूर :** "मलेरना रोड़ स्थित फैक्ट्री में तनखा 1200 रुपये महीना देते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में लैट्रीन तक नहीं है।"

**फर आटो वरकर :** "कम्पनी ने हमारा 3 साल का पी.एफ. जमा नहीं करवाया है, भविष्य निधि अधिकारी कोई कार्रवाई नहीं करते। फरवरी से वेतने नहीं दिया है, श्रम विभाग के अधिकारी कार्रवाई नहीं करते। यूनियन वाले क्या करते हैं यह सब वरकर जानते हैं। ऐसे में कहाँ जायें? क्या करें? कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर तो कभी के फैक्ट्री छोड़ गये, फँसे हम 50 परमानेन्ट हैं। न छोड़ते बनता है और न करते बनता है — रोज फैक्ट्री में आ कर 8 घण्टे खाली बैठते हैं।"

**ए सी आटो मजदूर :** "प्लॉट 50 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 900-1000-1500 रुपये तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। वेतन आधा, फिर आधा करके 28-29 तारीख तक जा कर देते हैं।"

**किर्लोस्कर न्यूमैटिक्स वरकर :** "पहले नाम के. जी. खोसला कम्प्रेसर था। बिक गई की आड़ में सब को नौकरी से निकाल दिया गया। अब किर्लोस्कर पूना फैक्ट्री से लाये 5 तथा केस जीत कर आये 3-4 लोग ही परमानेन्ट हैं और बाकी सब ठेकेदार के जरिये रखे गये हैं। पुराने वरकर व स्टाफ फिर से रखे गये हैं पर प्रॉम्प्ट सेक्युरिटी सर्विस के जरिये।"

**आटोपिन मजदूर :** "इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में अप्रैल, मई और जून की तनखायें आज 17 जुलाई तक नहीं दी हैं तथा एक साल के ओवर टाइम के पैसे भी कम्पनी ने नहीं दिये हैं। चार वरकरों ने केस किया तो बकाया वेतन के संग बकाया ओवर टाइम के पैसे भी कम्पनी ने उन्हें चटपट दे दिये हैं।"

**इग्नू कर्मचारी :** "इन्दिरा गाँधी नेशनल ओपन युनिवर्सिटी ने मदन गढी में डेली वेजेज वाले नाम से वरकर रखे हैं। पैसे तो निर्धारित दर से देते हैं पर समय पर नहीं देते। जून का वेतन आज 17 जुलाई तक नहीं दिया है।"

**जयको स्टील फासनर मजदूर :** "जे बी एम ग्रुप की इस फैक्ट्री में तीन-चार सौ वरकर काम करते हैं पर यहाँ पीने के पानी तक का प्रबन्ध नहीं है। टैंकरों से लाया जाता खारा जल गर्मियों में गरम ही पीना पड़ता है।"

**महारानी पेन्ट्स वरकर :** "हम कैजुअलों को 70 रुपये दिहाड़ी देते हैं और रविवार की छुट्टी के पैसे काट लेते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। बहुत गन्दा काम है — पाउडर नाक-मुँह में जाता है।"

**क्रशलेस डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग मजदूर :** "समयपुर रोड़ स्थित फैक्ट्री में कोई भी वरकर परमानेन्ट नहीं है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं। निकाल दिये जाने पर 42 मजदूरों ने केस किया तब उन्हें प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे दिये गये।"

**रेनबो वरकर :** "4-5 महीनों से खुली फैक्ट्री में **यामाहा** मोटरसाइकिलों की पेन्टिंग का काम होता है और हमें 1300 रुपये महीना वेतन देते हैं।" **(बाकी पेज तीन पर)**

# खटना 12–16–24–36 घण्टे

**ए एन जी आटोमोटिव इन्डस्ट्रीज मजदूर :** " 14/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में ऐसा नियम बना रखा है कि जब तक रिलीवर नहीं आये रुकना है, चाहे 24 घण्टे लगातार काम करना पड़े। हर रोज 4 से 8 घण्टे ओवर टाइम काम तो जबरन करवाते ही हैं। ओवर टाइम का भुगतान कम्पनी सिंगल रेट से करती है। हम 150 वरकरों में से किसी को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया है। भारी गाड़ियों को नियन्त्रण में रखने के काम आता गियर बॉक्स का स्पाइडर फैक्ट्री में बनाया जाता है और अमरीका निर्यात किया जाता है। काम का बोझ बहुत ज्यादा है और साहब लोग चिल्लाते रहते हैं। बहुत तनाव रहता है। कम्पनी एक कप चाय तक नहीं देती।"

**हैदराबाद इन्डस्ट्रीज वरकर :** " सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में फ्लाई ऐश विभाग में भर्ती कम्पनी करती है पर रखती ठेकेदार के खाते में है। ड्युटी 12 घण्टे की है – सुबह 9 से रात 9 बजे तक। बोरियों में राख भरनी पड़ती है और शर्त है कि रोज काम निपट जाने पर ही छुट्टी होगी। इससे ड्युटी 12 की बजाय 15-16 घण्टे की हो जाती है – रात 12-1 बजे तक काम करना पड़ता है। चार घण्टे ओवर टाइम काम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं। लेकिन रात 9 बजे बाद जो 3-4 घण्टे और काम करवाते हैं उसके कोई पैसे नहीं देते। ठेकेदार कहता है कि यह कम्पनी का नियम है। इस सब का विरोध करने पर हम 25 में से 12 को नौकरी से निकाल दिया है।"

**हिन्दुस्तान सिल्क मिल मजदूर :** " सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने हमें भर्ती किया और फार्म भर कर कहा कि हम त्रिशूल ठेकेदार के खाते में रहेंगे। हम से 8 की बजाय 11 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी लेते हैं और बदले में 2400 रुपये महीना देते हैं। हम में किसी को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया है, पी.एफ. भी नहीं। एतराज करने पर हम में से 12 को नौकरी से निकाल दिया है।"

**बोनी आटोमोटिव्ज वरकर :** "प्लॉट 77 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से। कारीगरों को हैल्परों का ग्रेड देते हैं। हैल्परों को महीने के तीसों दिन काम के बदले में 1500 रुपये।"

**प्रिसिजन वायर मजदूर :** "प्लॉट 83 डी एल एफ स्थित फैक्ट्री में रोज 12 घण्टे की शिफ्ट के बाद 4 घण्टे और जबरन काम करवाते हैं। गाली-गलौज बहुत ज्यादा है। कोई मजदूर शनिवार को छुट्टी कर लेता है तो उसकी रविवार की साप्ताहिक छुट्टी मैनेजमेन्ट काट लेती है। डी.ए. कम्पनी देती ही नहीं और ओवर टाइम का भुगतान बेसिक की डेढी दर से करती है।"

**मेगा फोर्ज वरकर :** "गर्म काम है फिर भी रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं।"

**किरण पैकेजिंग मजदूर :** " मलेरना रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की ड्युटी है। महिला मजदूरों को 1050 से 1200 रुपये महीना देते हैं। पुरुष हैल्परों को 1250 से 1500 रुपये महीना। ओवर टाइम सिंगल रेट से। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं।"

**एस पी एल वरकर :** " प्लॉट 21 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में इम्ब्राइडरी विभाग में मजदूर बिलकुल बराबर रखते हैं, एक भी एक्स्ट्रा नहीं रखते। हर रोज 12 घण्टे ड्युटी है, महीने के तीसों दिन। छुट्टी देते ही नहीं। ऐसे में बहुत जरूरी होने पर कोई मजदूर छुट्टी कर लेता है तो उसके बदले में दूसरे को 36 घण्टे लगातार काम करना पड़ता है – 12 घण्टे अपनी ड्युटी, 12 घण्टे अनुपस्थित होने वाले की और फिर 12 घण्टे वाली अपनी दूसरे दिन की ड्युटी! इम्ब्राइडरी विभाग का इन्चार्ज-मास्टर रमेश तो कम्पनी से भी दो कदम आगे है : चाय के लिये निर्धारित 15-15 मिनट के दो ब्रेक भी हमें नहीं देता।"

# और बातें यह भी (पेज दो का शेष)

**क्लच आटो मजदूर :** " वेतन देरी से देने का सिलसिला जारी है। मैनेजिंग डायरेक्टर का पारा इतना चढा हुआ है कि श्रीमान ने सीनियर स्टाफ से मारपीट की है।"

**ए बी बी मोटर मजदूर :** " विश्व के अनेक क्षेत्रों से फैक्ट्री का दौरा करने आने वाले साहब लोगों की सँख्या आजकल काफी बढ गई है। अपनी छवि के चक्कर में कम्पनी ने जो परमानेन्ट नहीं हैं उन वरकरों को भी वर्दी-जूते दे दिये हैं। वर्क लोड में भारी वृद्धि पर कम्पनी ने इन्सेन्टिव की चाशनी लगाई है।"

# झूठ-सच

**लड़का मजदूर :** " गाँव से पँजाब होते हुये मैं, मुकेश कुमार यहाँ सैक्टर-4 झुग्गियों में अपने दूसरे भाई के पास पहुँचा। मुझे चावला कालोनी में मुन्ना ठेकेदार के पास फेटलिंग का काम सीखने में लगा दिया। मुन्ना का काम डाउन होने पर सुदीन खान ठेकेदार मुझे सैक्टर-6 में फरीदाबाद टूल्स फैक्ट्री में ले गया।

" फरीदाबाद टूल्स में इस साल जनवरी में 80 टन और 250 टन वाली मशीनें बन्द थी और 1000 टन की डाइकास्टिंग मशीन चल रही थी। मशीन पर से निकलने के एक रास्ते पर भट्टी है और दूसरे पर उस समय ताला रहता है जब वरकर कम होते हैं। ऐसे में मशीन की बगल से निकलना पड़ता है जहाँ फ्लश का डर रहता है। एक दिन सुबह-सवेरे छोटा करके मुझे चाय लेने भेजा। मुझे मशीन की बगल से जाना पड़ा और चाय ले कर मैं बगल से ही लौट रहा था कि अचानक मशीन ने फ्लश मारा। मेरी आँखों, पेट, जीभ, गर्दन पीठ पर पिघला अल्युमिनियम गिरा। कपड़ों ने आग पकड़ ली। कमीज मैंने फाड़ी और बनियान ऑपरेटर ने आ कर फाड़ी। ऑपरेटर को पता था कि मशीन फ्लश मारने वाली है पर बताया नहीं – फ्लश से किसी का हड़बड़ाना और थोड़ा जल जाना आपस में हा-हा, हू-हू के लिये चलता रहता है।

" मैं बुरी तरह जल गया था। मैनेजर मुझे इलाज के लिये ले जाने को तैयार नहीं था लेकिन सुदीन खान ठेकेदार बोला कि उसे स्कूटर चलाना नहीं आता तब मैनेजर मुझे स्कूटर पर सैक्टर-7 में डॉ. सुधीर कौल के पास ले गया। डॉ. कौल ने इन्जेकशन लगाया और आँख के लिये दूसरे डॉक्टर के पास ले जाने को कहा। मैनेजर मुझे बल्लभगढ में डॉ. ए.के. गुप्ता के पास ले गया जिन्होंने दस दिन तक तो आँख से अल्युमिनियम के कण निकाले और फिर डेढ महीने इलाज करने के बाद दिल्ली में ऑल इण्डिया मेडिकल इन्सटीट्यूट भेज दिया। इलाज के बावजूद मेरी दाहिनी आँख बिलकुल खराब हो गई।

**" एक्सीडेन्ट फरीदाबाद टूल्स फैक्ट्री में 1000 टन डाइकास्टिंग मशीन पर हुआ था लेकिन जो एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भरी उसमें एक्सीडेन्ट को सुपर अलॉय कास्ट फैक्ट्री में 600 टन मशीन पर दिखाया। मुझे काम पर सुदीन खान ठेकेदार ले गया था पर कागजों में मुझे नेहरू ग्राउण्ड स्थित पीवट मलटीफर सर्विसेज का वरकर दिखाया। एक्सीडेन्ट के एक महीने बाद मुझे ई.एस.आई. कार्ड दिया।**

" सारे कागज सैक्टर-6 में 9 जे स्थित **सुपर इलेक्ट्रिकल** में बनाये गये। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट, दवाइयों के बिल के पैसे, किराया, खर्चा आदि सुपर इलेक्ट्रिकल के टाइम आफिस से। दिल्ली जाने के लिये दो बार सुपर अलॉय कास्ट के टाइम आफिस से भी मुझे पैसे दिये गये। सुपर इलेक्ट्रिकल का टाइम कीपर जसमेर और सुपर अलॉय कास्ट का टाइम कीपर सुखबीर मुझ से बहुत प्यार से बोलते थे और कहते थे कि बेटा कोई चिन्ता मत करो, ठीक होते ही तुम्हारी परमानेन्ट नौकरी कर देंगे। खर्चे दिये जाने और परमानेन्ट नौकरी के लालच में मेरे भाई मुझ से यहाँ-वहाँ कागजों पर दस्तखत करने को कहते रहे। हेरा-फेरी पर हम चुप रहे।

" इलाज पूरा होने के बाद मैं अब जुलाई में नौकरी के लिये सुपर इलेक्ट्रिकल के गेट पर गया तो टाइम कीपर ने तेवर बदल कर कहा कि तुम ठेकेदार के वरकर थे, कम्पनी का तुम से कोई लेना-देना नहीं है, भागो। मैंने कम्पनी के चेयरमैन मित्तल से मिलने की कोशिशें की पर मुझे फैक्ट्री के अन्दर जाने ही नहीं देते, 9 जे के गेट से डाँट कर भगा देते हैं। मैं सुपर अलॉय कास्ट के गेट पर जाता हूँ तो वहाँ का टाइम कीपर मुझ पर हँसता है और कहता है कि तुम अब कुछ नहीं कर सकते।"

## चमक–दमक के पीछे

**प्रणव विकास मजदूर :** " प्लॉट 45–46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मशीनें बन्द नहीं होनी चाहियें इसलिये **कम्पनी ने 24 घण्टे के दिन को 25 घण्टे का कर दिया है** – ए शिफ्ट 7 से 3.30, बी शिफ्ट 3.15 से 11.45 और सी शिफ्ट 11.15 से 7.15, कुल 25 घण्टे।

" कम्पनी ने आवश्यकता से कम मजदूर रखे हैं पर काम रुकना नहीं चाहिये इसलिये हर शिफ्ट के शुरू होने से पहले सुपरवाइजर और शिफ्ट इन्चार्ज मीटिंग लेते हैं जिसमें पता लग जाता है कि कितने वरकर नहीं आये हैं और उतने कार्यरत शिफ्ट के मजदूरों को जबरन ओवर टाइम पर रोक लेते हैं। **सी शिफ्ट में सब वरकर ड्युटी पर आते हैं तब भी बी शिफ्ट वाले एक तिहाई मजदूरों को ओवर टाइम पर रोकते हैं क्योंकि सी शिफ्ट में आवश्यक सँख्या से एक तिहाई मजदूर कम्पनी ने कम रखे हैं।** शिफ्ट 15 दिन की होती है और ऐसे में बी शिफ्ट में होना कुछ ज्यादा ही दुर्गत लिये है – दोपहर सवा तीन बजे से अगले रोज सुबह सवा सात बजे तक उत्पादन करना! इतने पर ही कम्पनी बस नहीं करती – **प्रत्येक रविवार को भी जबरन ओवर टाइम** करवाती है। रोज 24 घण्टे और हफ्ते के सातों दिन प्रणव विकास लिमिटेड में मशीनें चलाती रहती हैं और होण्डा, पेलियो, बोलेरो, अरमाडा, मारुति, सूमो कारों के एयर कन्डीशनरों के कूलिंग कॉयल तथा कन्डेन्सर बनाते हम लोग सूखते जाते हैं। ओवर टाइम काम की पेमेन्ट कम्पनी सिंगल रेट से देती है।

" एयरकन्डीशन कारों की सँख्या तेजी से बढ़ रही है इसलिये अभी कम्पनी के उत्पादन की माँग बहुत है। ऐसे में मैनेजमेन्ट ने अभी जुलाई में उत्पादन की निर्धारित मात्रा में तीन गुणा वृद्धि कर दी है। इसके अनुसार रफ्तार हासिल नहीं कर पाने वाले एक डिप्लोमा होल्डर चैकर को नौकरी से निकाल दिया है। कहते हैं कि हर घण्टे का उत्पादन लिखो!

" प्रणव विकास में मेन्टेनैन्स वाले मात्र 5 मजदूर परमानेन्ट हैं। फैक्ट्री दौरे पर आने वालों को दिखाने के लिये 5 कैजुअल वरकर रखे हैं, दौरे के दिन इन्हें वर्दी पहना देते हैं। ट्रेनी के तौर पर रखे 50–60 डिप्लोमा होल्डरों से उत्पादन लेते हैं। दो ठेकेदारों के जरिये 50 वरकर रखे हैं। ठेकेदार सिर्फ 10 तारीख को तनखा देने आते हैं – बीच में वे कभी दिखाई नहीं देते और न उनके कोई मुन्शी हैं। हाजरी कम्पनी गेट पर, काम कम्पनी इम्पलाई बाँटते हैं, ओवर टाइम पर सुपरवाइजर जबरन रोकते हैं। **ठेकेदार मात्र आड़ हैं और स्थाई कार्य के लिये ठेकेदारों के जरिये वरकर रखे हैं।**

" फैक्ट्री में एग्जास्ट फैन नहीं लगाये हैं और इस वजह से घुटन बहुत है। पीने को शुद्ध जल देते थे पर इधर उसमें भी मिलावट करने लग गये हैं – बोतलों वाले में हाथ धोने वाला पानी।"

## विचारणीय

# 1. पहचान की राजनीति

**पलवल** से एक मित्र ने बताया है कि

●शहर में कुछ समय पूर्व आपसी झगड़े में एक युवक ने दूसरे युवक के चाकू मारा। घायल युवक के परिजनों ने चाकू मारने वाले के पिता के चाकू मार दिया। चाकूबाजी की यह वारदातें सार्वजनिक तौर पर हुई थी और लोगों ने इन्हें गुण्डों के बीच आपसी झगड़े के तौर पर ले कर नजरअन्दाज कर दिया। लेकिन कुछ संगठनों ने मामले को हिन्दू–मुसलमानों के बीच झगड़ा बनाने की बहुत कोशिशें की। फसाद हुआ नहीं।

●चाकूबाजी से अनजुड़ा एक युवक कुछ दिन बाद रात को अपने घर नहीं पहुँचा। थाने में इसे अपहरण का मामला दर्ज करवा कर फिर कुछ संगठनों ने रात–भर इसे हिन्दू–ईसाई मामला बना कर तूल देने के प्रयास किये। दूसरे रोज सुबह युवक खुद घर पहुँच गया – रात को वह अपनी नानी के पास चला गया था।

**वर्तमान व्यवस्था में परेशानियाँ इस कदर बढ गई हैं और बढ़ती जा रही हैं कि हालात दिनोंदिन अधिकाधिक विस्फोटक हो रहे हैं। हर एक फट पड़ने तक लबालब भरी है। प्रत्येक व्यक्ति बम बना है। ऐसे में वर्तमान व्यवस्था के पक्षधरों की कोशिशें हैं कि लोगों के गुस्से को एक-दूसरे की मार-काट की राहों पर मोड़ दिया जाये।**

वर्तमान व्यवस्था ने दुर्गत इस कदर बढा दी है कि माँ–बेटे, भाई–बहन के बीच ही नहीं बल्कि प्रत्येक "मैं" की अपने स्वयं के साथ दर्दनाक दूरियाँ बन गई हैं, बढती जा रही हैं। लेकिन, जहाँ सगे भाइयों के बीच दूरियाँ जगजाहिर हो गई हैं वहाँ वर्तमान व्यवस्था के पक्षधर गोत्र, जाति, क्षेत्र, धर्म, देश के आधार पर करोड़ों लोगों को समरस प्रस्तुत कर एक पहचान से चिन्हित करने में बढ–चढ कर हिस्सा लेते हैं। बढती समुदायहीनता, बढता अकेलापन और प्रत्येक व्यक्ति के हजारों पहलुओं में से आवश्यकता अनुसार दो–चार को काट–छाँट कर उनके आधार पर लेबल चिपकाना पहचान की राजनीति, आइडेन्टिटी पॉलिटिक्स का आधार है। और, पहचान की राजनीति ऊँच–नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में पीड़ितों को एक–दूसरे के विरुद्ध कर इन व्यवस्थाओं की रक्षा का एक प्रमुख जरिया रही है, है।

पीड़ितों को दोषी ठहराने की बजाय पीड़ितों के बीच तालमेल चाहियें। इसके लिये प्रत्येक व्यक्ति के हजारों पहलुओं को ध्यान में रखना प्राथमिक आवश्यकताओं में लगता है। ऐसा कर अपने सगे भाई, अपने चाचा को अपनी दुर्दशा के लिये जिम्मेदार ठहराने वाली पीड़ा से भी हम छुटकारा पा सकते हैं।

मार–काट के बाद प्रतिष्ठित जनों की शाँति समिति बनाना अगली मार–काट की तैयारी होती है। दुर्गत की मार झेल रहों के गुस्से का दुर्गत की जननी वर्तमान व्यवस्था पर केन्द्रित होना ही दुर्गत से निजात दिला सकता है।

# 2. गुमनाम कम्पनी

**बाटा कम्पनी** ने फरीदाबाद फैक्ट्री का सौदा जिस गुमनाम कम्पनी, फैशन शू प्रा. लि. से किया है वह वास्तव में बाटा कम्पनी द्वारा स्वयं बनाई गई कम्पनी है। फैशन शू प्रा. लि. में बाटा कम्पनी के 51 प्रतिशत शेयर हैं!

फैशन शू को फरीदाबाद फैक्ट्री का संचालन सौंपने के बाद भी यहाँ के मजदूरों के प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसों का इस्तेमाल बाटा कम्पनी ही करेगी! यह पैसे बाटा ट्रस्ट में ही रहेंगे। जाहिर है, प्रोविडेन्ट फण्ड पर कोई नया खतरा नहीं है। आमतौर पर कम्पनियाँ ग्रेच्युटी का अलग खाता रखती हैं और इसके बारे में मजदूर पता कर सकते हैं। फरीदाबाद फैक्ट्री के उत्पादन की बिक्री बाटा कम्पनी ही करेगी..... जाहिर है, वास्तव में बहुत कम बदला है।

दरअसल, फरीदाबाद फैक्ट्री मजदूरों पर प्रत्यक्ष हमलों में असफल रही बाटा कम्पनी ने ओट से, आड़ ले कर हमला करने की योजना बनाई है। "फैक्ट्री बेच दी", " फण्ड–ग्रेच्युटी हड़पे जायेंगे" के शोर–शराबे से मजदूरों में दहशत फैलाने की कोशिशें कम्पनी कर रही है।

कह सकते हैं कि फैशन शू का चोगा धारण किये बाटा कम्पनी के नये सेनापति को फरीदाबाद फैक्ट्री में मजदूरों की हालत लखानी शूज मजदूरों से भी बदतर करने के निर्देश दिये गये हैं। निर्ममता की प्रतिमूर्ति बन कोई साहब शीघ्र ही काम के बोझ में भारी वृद्धि, छँटनी, वेतन व भत्तों में कटौती के लिये ताबड़तोड़ आक्रमणों का नेतृत्व करेगा।

ठण्डे रह कर, धीरज से बाटा मजदूरों ने ऐसे हमलों को पहले भी विफल किया है और फिर वैसा ही कर सकते हैं। फूँ–फाँ, डर, दहशत नुकसानदायक हैं।

लखानी शूज मजदूरों की स्थिति में सुधार बाटा उर्फ फैशन शू मजदूरों की स्थिति में सुधार भी लिये है।

**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।